कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937

कद्दूवर्गीय सब्जियों की अगेती खेती (फरवरी-मार्च) के लाभ

दिजेन्द्र कुमार, मोहित लाल एवं अरविन्द कुमार[1]*

सब्जी विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश-224229

[1]कीट विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश-224229

*संबंधित लेखक: ak847051@gmail.com

परिचय

मैदानी भागो में गर्मी के मौसम में मार्च से लेकर जून तक कद्दू वर्गीय सब्जियों की खेती की जाती है। इन सब्जियों की अगेती खेती जो अधिक आमदनी देती है, करने के लिए पॉली हाउस तकनीक में जाडे के मौसम में इन सब्जियों की नर्सरी को तैयार करके की जा सकती है। कद्दू वर्गीय सब्जियाँ गर्मी तथा वर्षा के मौसम की महत्वपूर्ण फसलें हैं। जो पोषण की दृष्टि से ये बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इनमें बहुत ही आवश्यक विटाामिन, खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं, जो हमारे स्वस्थ के लिए आवश्यक हैं।

उपयुक्त जलवायु

कद्दू वर्गीय फसलों के लिए शीतोष्ण एवं समशीतोष्ण जलवायु उपयुक्त होती है। गर्म एवं शुष्क जलवायु वाले प्रदेश इसकी खेती के लिए उत्तम है। यह गर्मी के मौसम की फसल है। बीज के जमाव एवं पौधों के बढ़वार के लिए 25 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है।

भूमि का चुनाव

फसल के लिए बलुई दोमट भूमि उत्तम होती है। लेकिन समतल सींचित खेतों एवं सूखे तालाबों के क्षेत्रों में भी खेती की जा सकती है। इनकी खेती के लिए पानी के अच्छे निकास वाली बलुई दोमट भूमि और रेतीली मिट्टी सर्वोत्तम है। फसल की बढ़िया वानस्पतिक वृद्धि एवं उपज के लिए खेत में पर्याप्त जीवांश मात्रा का होना बहुत ही जरूरी होता है। खेत की मिटटी का पी एच मान 6 से 7 सर्वोत्तम रहता है।

खेत की तैयारी

कद्दू वर्गीय फसलों की बुआई हेतु खेत की तैयारी के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा 2 से 3 जुताईयां कल्टीवेटर से करनी चाहिए। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा चलाकर मिट्टी को भुर-भुरा कर लेना चाहिये। उचित जल निकास के लिए खेत को समतल कर लेना चाहिये तथा आखिरी जुताई के समय खेत में 200 से 250 कुंटल सड़ी गोबर की खाद को अच्छी प्रकार मिला देना चाहिये।

कद्दू वर्गीय सब्जियों की उन्नतशील प्रजातियाँ

फसल	प्रजातियाँ
खीरा	पोइंसेट, जापानीज, लोंग ग्रीन, पूसा संयोग तथा पूसा उदय, कल्यानपुर हरा खीरा, पंजाब सेलेक्शन, पंत शंकर खीरा-1, स्वर्ण पूर्णिमा
लौकी	नरेन्द्र माधुरी, नरेन्द्र देव लौकी-10, पूसा नवीन, पूसा संदेश, पूसा संतुष्टि, पूसा समृद्धि, पी.एस.पी.एल तथा पूसा हाइब्रिड-3
करेला	नरेन्द्र बाराहमासी-1, नरेन्द्र बाराहमासी 2, पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, पूसा हाइब्रिड-2
तोरी	चिकनी तोरी- पूसा सुप्रिया, पूसा स्नेहा, पूसा चिकनी एवं धारीदार तोरी- पूसा नसदार,सतपुतिया, पूसा नूतन व को-1।
चप्पन कद्दू	आस्ट्रेलियन ग्रीन, पैटी पेन, अर्ली येलो, पूसा अलंकार व प्रोलिफिक।
कद्दू	नरेन्द्र अग्रिम, नरेन्द्र अम्रित, नरेन्द्र उपकार,पूसा विश्वास, पूसा विकास, पूसा हाइब्रिड-1।
खरबूजा	पूसा मधुरस, पूसा शर्बती, हरा मधु
तरबूजा	शुगर बेबी, अर्का मानिक, अर्का ज्योति, दुर्गापुर मीठा
टिंडा	पंजाब टिंडा, अर्का टिंडा।

e-ISSN No. 2583-0937

उर्वरक व खाद

अधिकांश बेल वाली उपरोक्त सब्जियों में खेत की तैयारी के समय 15-20 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की सडी खाद व 80 किग्रा. नत्रजन, 50 किग्रा. फास्फोरस तथा 50 किग्रा. पोटाश की आवश्यकता होती है।

बीज बुवाई

खेत में लगभग 45 सेंमी. चैड़ी तथा 30-40 सेंमी. गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 1.5 मीटर से 5 मीटर तक रखें। बुवाई से पहले नालियों में पानी लगा दें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाए तो बुवाई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके 0.50 से 1.0 मीटर की दूरी पर बीज बोएं।

बीज दर

विभिन्न फसलों के लिए बीज दर निम्न प्रकार है:

फसल	बीज दर (ग्राम प्रति हेक्टेयर)
खीरा	2-3 किग्रा.
लौकी	4-5 किग्रा.
करेला	4-5 किग्रा.
कद्दू	3-4 किग्रा.
तौरी	2.5-3 किग्रा.
चप्पन	5-6 किग्रा.,
खरबूजा	2-3 किग्रा.
तरबूज	4-5 किग्रा.

बुवाई का समय

बसंत-गर्मी की फसल बुवाई फरवरी-मार्च में करते हैं तथा वर्षा के मौसम के लिए जून के अंत से जुलाई माह में करते हैं।

सिंचाई

फसल की आवश्यकतानुसार समय-समय पर पानी का प्रबंध करें तथा सिंचाई व निराई-गुड़ाई नालियों में ही करें।

पॉली हाउस विधि से अगेती खेती

कद्दूवर्गीय सब्जियों की उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में गर्मी के मौसम के लिए अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉली हाउस में जनवरी माह में झोंपड़ी के आकार का पाली हाउस बनाकर पौध तैयार कर लेते हैं। पौधे तैयार करने के लिए 15 × 10 सेंमी. आकार की पॉलीथीन की थैलियों में 1:1:1 मिट्टी, बालू व गोबर की खाद भरकर जल निकास की व्यवस्था हेतु सूजे की सहायता से छेद कर लेते हैं। बाद में इन थैलियों में लगभग 1 सेंमी. की गहराई पर बीज की बुवाई करके बालू की पतली परत बिछा लेते हैं तथा हजारे की सहायता से पानी लगाते हैं। लगभग 4 सप्ताह में पौधे खेत में लगाने के योग्य हो जाते हैं।जब फरवरी माह में पाला पड़ने का डर समाप्त हो जाये तो पॉलीथीन की थैली को ब्लेड से काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेंड पर रोपाई करके पानी लगाते हैं। इस प्रकार लगभग एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है जिससे किसान अगेती फसल तैयार करके अधिक लाभ ले सकता है।

सब्जियों की तुडाई उपरांत प्रौद्योगिकी

- बेल वाली फसलें जैसे खीरा, घीया, तोरई, करेला व कद्दू में तुड़ाई तब करें, जब वे कच्चे व मुलायम हों।
- तुड़ाई केंची की मदद से करें तथा डंठल सहित (4-5 सें.मी.) फलों को तोड़ें।
- रंग व आकार के आधार पर श्रेणीकरण कर पैकिंग करें।
- पैक किये गये फलों को शीघ्र मण्डी पहुंचाएं या शीतगृह में रखें।
- करेला के फलों को काट कर (छल्लानुमा) स्वच्छ जगह पर सुखाएं एवं पॉलीथीन के थैलों में सील करके भण्डारित करें।

उपज कुंतल प्रति हेक्टेयर

फसल	उपज कुंतल प्रति हेक्टेयर
लौकी	300-400 कुंतल
करेला	150- 200 कुंतल
कद्दू	150-200 कुंतल
तोरी	150-200 कुंतल
चप्पन कद्दू	150-200 कुंतल
खरबूजा	150-200 कुंतल
तरबूज	300-500 कुंतल
टिंडा	100-150 कुंतल

प्रमुख कीट व रोग नियंत्रण

लाल कद्दू भृंग

इस कीट के शिशु व वयस्क दोनों ही फसल को हानि पहुंचाते हैं। वयस्क कीट पौधों के पत्ते में टेढ़े-मेढ़े छेद करते हैं जबकि शिशु पौधों की जड़ों, भूमिगत तने व भूमि से सटे फलों तथा पत्तों को नुकसान पहुंचाते हैं।

e-ISSN No. 2583-0937

नियंत्रण

- फसल समाप्त होने पर बेलों को खेत से निकालकर नष्ट कर दें।
- फसल की अगेती बुवाई से कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें।
- संतरी रंग के भृंग को सुबह के समय इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
- कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर या एमामेक्टिन बैंजोएट 5 एस.जी. 1 ग्राम प्रति 2 लीटर या इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मिली. प्रति 2 लीटर का छिड़काव करें।

फल मक्खी

इस कीट की मक्खी फलों में अंडे देती है तथा षिषु अंडे से निकलने के तुरंत बाद फल के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंगें बना देते हैं।

नियंत्रण

- खेत की निराई-गुड़ाई करके प्युपा को नष्ट कर दें।
- मई-जून के महीने में गहरी जुताई करें।
- ग्रसित फलों को भी एकत्रित करके नष्ट कर दें।
- मक्खियों को आकर्षित कर मारने के लिए मीठे जहर, जो एन्डोसल्फान 35 ई.सी. 5 मि. ली. प्रति लीटर व 1 प्रतिशत चीनी प्रति गुड़ (25 ग्राम प्रति लीटर) से बनाया जा सकता है, का 50 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। फल मक्खी रात को मक्की के पौधों के पत्तों की निचली सतह पर विश्राम करती है इसलिए कद्दू वर्गीय फसलों के खेत के पास मक्की लगाने व उस पर छिड़काव करने से इस कीट को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।
- फल मक्खी के नरों को आकर्षित करने के लिए ''मिथाइल यूजीनोल'' गंधपाश का प्रयोग भी किया जा सकता है।

सफेद मक्खी

इस कीट के शिशुओं व वयस्कों के रस चूसने से पत्ते पीले पड़ जाते हैं। इनके मधु बिन्दु पर काली फंफूद आने से पौधों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है।

नियंत्रण

- इस मक्खी को आकर्षित करने के लिए पिली ग्रीस लगे हुए स्टकी ट्रैप का प्रयोग करना चाहिए।
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करना चाहिए।

- समय-समय पर खेत की निराइ गुड़ाई करनी चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्लू. एस.10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।
- ट्राईजोफोस 40 प्रतिशत ई.सी. को 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- नीम बीज के अर्क का (5 प्रतिशत) या बी.टी. 1 ग्राम प्रति लीटर या कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 मिली. प्रति लीटर या स्पाईनोसेड 45 एस.सी. 1 मि.ली. प्रति 4 लीटर का छिड़काव करें।
- इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली. प्रति 3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ईसी. 2 मि.ली. प्रति लीटर का छिड़काव करें।

चेंपा (माहू)

चेपा लगभग सभी कद्दू वर्गीय फसलों पर आक्रमण करते हैं। ये पौधों के कोमल भागों से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते हैं।

नियंत्रण

- लेडी बर्ड भृंग का संरक्षण करें।
- नाइट्रोजन खाद का अधिक प्रयोग न करें।
- इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली. प्रति 3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली. प्रति लीटर लीटर का छिड़काव करें।

चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू)

कद्दू वर्गीय सब्जियों में फफूंद से लगने वाली पाउडरी मिल्ड्यू प्रमुख रोग है। इसके प्रकोप से बेलों, पत्तियों तथा तनो पर सफेद पर्त सी बन जाती हैं।

नियंत्रण

इसकी रोकथाम के लिए 1 मिली. कैरथेन प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 से 12 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिडकाव करें।

मृदुल आसिता (डाउनी मिल्ड्यू)

पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे पड जाते हैं। गर्मियों में वारिश के समय अधिक होता है।

नियंत्रण

इसकी रोकथाम के लिए डाईथेन एम 45 या रिडोमिल 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।